123

Information Explosion and the 21st Century Youth

Prospects and Challenges

Publishers and Disibutors Manyata Prakashan
60 - C Mayakunj, Mayapuri
New Delhi - 10064 (India)
Tel 011 - 2540 7546, 2513 7546
999889290, 98110 14522
mail at manyataprakashan@gmail.com
manyata_prakashan@yahoo.com

© KMGGPGC

ISBN 978-81-936482-7-8

Barcode 9 788193 648278

Edition 2019

Printed by National Marketings
998, Katra Mangalsen,
Main Chawri Bazar,
Delhi-110006
mail at rakesh_national@yahoo.com
Typesetting Printrades New Delhi-110064

Scanned by CamScanner

४१

सूचना प्रौद्योगिकी एवं मीडिया में हिन्दी : एक विमर्श

सारांश

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी एवं मीडिया का प्रगतिशील युग है। सूचना अनेक स्रोतों से [illegible] की जाती हैं। प्रिन्ट मीडिया और इलैक्ट्रानिक मीडिया दोनों ही सूचना क्रान्ति के सशक्त [illegible] माध्यमों ने वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व को एकता के सूत्र में बाँध दिया है। सम्पूर्ण विश्व सांस्कृतिक [illegible] की प्रक्रिया के साथ-साथ हिन्दी भाषा विनिमय की प्रक्रिया से भी जुड़ गया है, अकेले [illegible] उत्पाद के साथ-साथ निजी कम्पनियों का उत्पाद और विदेशी कम्पनियों का उत्पाद भारत के [illegible] बन गया है। सर्व विदित है कि सूचना प्रौद्योगिकी ने जनमानस की जगारूकता, [illegible] मानसिक मूल्यांकन, प्रयोगधर्मिता, आर्थिक एवं सामाजिक विकास, उत्पादन के प्रति [illegible] स्रोत उपलब्ध कराए हैं।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के अन्तर्गत रेडियो एक विशिष्ट सस्ता एवं सुलभ, पुरातन [illegible] श्रवणीयता की गहरी पहचान देता है इतना ही नहीं वह मुद्रित माध्यम की अपेक्षा अधिक [illegible] आन्तरिक क्षेत्रों तक संदेश पहुँचाने में अधिक समर्थ हुई है। पुरातन समय में ट्रॉजिस्टर सूचना [illegible] कदम था जिसने रडियो को आम जनता की क्रयशक्ति के अनुरूप बना दिया। यह सत्य है कि [illegible] पूर्वार्द्ध में ही रेडियो क्रान्ति एवं सूचना क्रान्ति में आमूल चूल परिवर्तन किया था जो आज [illegible] वार्ता और विभिन्न प्रकार के मनोरजंन के क्षेत्र में जनता के वर्ग में अपनी भूमिका स्थापित [illegible] कला, नाटक, रूपक, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, कृषि खेलकूद एवं एफ.एम. के अतिरिक्त [illegible] क्षेत्र में अपना योगदान दिया है।(1)

सूचना प्रोद्यौगिकी में क्रान्ति का दूसरा प्रमुख स्रोत दूरदर्शन है। दूरदर्शन के द्वारा संचार [illegible] का माध्यम है जो समाज में अधिक पसंद किया जाने वाला संचार का साधन बना। [illegible] लगभग 35 सैटेलाइट चैनल हैं जिसके 20 दूरदर्शन चैनल्स है, जो बहु-उद्देशीय, बहुभाषी एवं [illegible] सम्पूर्ण विश्व उपग्रह नेटवर्क से समाचार, खेलकूद, संगीत, शिक्षा एवं मनोरंजन के क्षेत्र में [illegible] एवं जिज्ञासा का शान्त करते हैं।

जनसंचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में मल्टीमिडीया की अवधारणा के साथ कम्प्यूटर [illegible] नवीनतम माध्यम ही है। यह वास्तव में एक ऐसा एकीकृत अभिकलन परिवेश है जो आंकड़ों के [illegible] ग्रहणकर सही तथा शीघ्र आकंलन करता है। कम्प्यूटर द्वारा विषय वस्तु, सजीव चित्रण [illegible] एनीमेशन एवं दृश्य तत्त्व सभी की प्राप्ति हमें यथास्थान प्राप्त हो जाती है। इन्टरनेट ने [illegible]

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी, कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, [illegible]

Scanned by CamScanner

अलग ही धूम मचा दी है। इन्टरनेट ने सम्पूर्ण विश्व को वहु-उद्देशीय एवं बहु-आयामी के नए आयाम दिए हैं इसी के फलस्वरूप आज अनेक विश्वविद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों में कम्प्यूटर माध्यम से शिक्षण दिया जाता है दूरस्थ शिक्षा के लिए भी यह एक उपयुक्त माध्यम है। वर्तमान में मल्टीमीडिया सुविधाओं को व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाते हुए सूचनाओं को इलैक्ट्रनिकींकरण किया जा रहा है। दूरस्थ शिक्षा के लिए यह एक उपयुक्त माध्यम है जिसके कारण आनलाईन आरक्षण, आनलाइन लाईसेंस, नवीनीकरण आनलाईन मल्टीमीडिया के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी नवीनतम एवं प्रोन्नत रूप परिलक्षित हो रहा है जैसे- टैलैक्स, टेलीप्रिन्टर, ब्राडबैण्ड, विडियोफोन, फैक्स, केवल टी.वी., ब्लाग, हाईस्पीड मेल सर्विस, ईमेल, सैलूलर, पेजर, टेली क्राफैसिंग आदि।(2)

ब्लागिंग न्यूमीडिया की अद्वितीय परिघटना के रूप में स्वेच्छा से स्वीकार हो रही है। इन्टरनेट के प्रभावशाली अनुप्रयोग ब्लागिंग ने आम लोगों की अभिव्यक्ति और रचनात्मकता को ठोस और सार्थक मंच दिया है। यह एक ऐसा मंच है जिसमें अभिव्यक्ति किन्हीं सीमाओं, वर्जनाओं, आचार सहिताओं या अनुशासन में कैद नहीं है।

ब्लागिगं का शाब्दिक अर्थ है- चिट्ठाकारी अर्थात बेलाग या बेलाग लपाट का सीधा साहित्य जो मानव के अन्तर्गत का काम करता है। ब्लॉग से अभिप्राय ऐसी डायरी से है जो कि नोटबुक में नहीं बल्कि इंटरनेट पर रखी जाती है। यह एक ऐसी डायरी है जो अपनी स्वयं की नहीं बल्कि सब की है। अर्थात् निरन्तर रची जा रही है विधाओं के दस्तावेज का एक ऐसा प्रयास है जो व्यक्तिगत होते हुए भी सामाजिक है।(3)

अब पाठक का लक्ष्य भी तीव्रगति से बदल रहा है आज का पाठक कलेवा पत्रकारिता से करता है दोपहर का भोजन साहित्यकार की दिनचर्या भिन्न होती है और होनी भी चाहिए वह सुबह सुविचारों से, दोपहर उसके शोध चिन्तन से तथा रात्रि उसके सुखद परिणाम से व्यतीत होनी चाहिए।

ब्लॉग को सामग्री किसी पृष्ट संख्या की सीमा नहीं है यह अनन्त और अन्तहीन हो सकती है या चार शब्दों की भी हो सकती है लेकिन यह सत्य है कि यह बहु-आयामी और बहु-स्तरीय हो सकती है। ब्लॉग किसी प्रबन्धन तंत्र की नियन्त्रण में नही है और न ही किसी सम्पादक की सहमति की आवश्यकता इसलिए ब्लोगों की भाषा बोली बन्धन से अलग है। यह विधा तो रीति मुक्त कवि घनानन्द के काव्य साहित्य की तरह है। (4)

वीडियोफोन प्रणाली प्रणाली ऐसी व्यवस्था है जिसमें व्यक्ति की आवाज ही नहीं बल्कि उसका चित्र भी देखा जा सकता है इस प्रक्रिया में एक कैमरा और वीडियों स्क्रीन जुड़ी होती हैं। टेलीफोन मिलाते ही कैमरा चालू हो जाता है और विद्युत संकेतों के माध्यम से आवाज और चित्र लक्ष्य व्यक्ति तक पहुँचाए जाते हैं। टेलीकांफ्रैसीगं से दो या दो से अधिक स्थानों पर तीन या तीन से अधिक व्यक्ति आपस में विचार विमर्श कर सकते हैं। (5)

सोशल मीडिया ने हिन्दी साहित्य को एक नया क्षितिज प्रदान किया है खासकर फेसबुक ने लोगों के सामने एक विस्तृत कैनवास रख दिए और सबने अपने मनमाने रंगों से इसे सजाना शुरू किया। जो आज भी जारी है। इसमें भला साहित्यकार क्यों पीछे रहते उन्होंने भी अपने शब्दों में रंग भरे इस पर बेशुमार। विशेषतः ऐसे साहित्यकार जो हिंदी साहित्य में मठाधीशी के शिकार रहे या फिर किसी तरह की गुटबाजी में कभी नहीं रह पाए उन्हें अपना साहित्य एक विशाल पाठकवर्ग तक पहुचाने का सुनहरा अवसर सोशल मीडिया ने उपलब्ध कराया।

नहीं होता तो मैं और अन्य प्रतिभाऐं जो इसके माध्यम से लगातार परवान चढ़ रही हैं, गुमनामी के अंधेरे में ही कहीं दफन हो जाती। आभारी हूँ मैं फेसबुक की जैसा कि मैंने देखा और समझा फेसबुक ने संपूर्ण साहित्यिक जगत को एक मंच पर ला दिया है। आज लेखक/कवि अपने पाठकों के नजदीक पहुँच रहे हैं। पाठक उनसे उनकी रचनाओं के बारे में बिना किसी बाधा के बातें कर रहे है। इतना ही नहीं साहित्यकारों, संपादकों तथा

Scanned by CamScanner

प्रकाशकों की आपसी दूरियाँ कम हुई है सभी एक दूसरे को समझने की कोशिश कर रहे हैं। [illegible] बदलाव है जो साहित्य के सुनहरे भविष्य के प्रति आश्वस्त करता है।

सोशल मीडिया का ही एक परिस्कृत रूप है प्रतिलिपि डॉटकॉम जो अब एक [illegible] भाषाओं के साहित्य को लगभग दो करोड़ पाठकों तक लगातार पहुँचा रहा है और यह सब [illegible] माध्यम से ही।

हिंदी साहित्य में हमेशा से ही सुनने में आ रहा है कि साहित्य के पाठक निरंतर कम [illegible] प्रतिलिपि पर प्रकाशित साहित्य के पाठकों की बड़ी संख्या इस भ्रम को तोड़ रही है। अब [illegible] पढ़ रहे हैं वह भी अपनी भाषा में (बचपन से अंग्रेजी माध्यम में पढ़े युवाओं की बड़ी संख्या है [illegible] रूप में) इतना ही नहीं मुझे अपने काम के दौरान कुछ ऐसे प्रसंगों से दो-चार होना पड़ा है कि [illegible] न करूँ तो यह लेख पूर्ण नहीं होगा किसी तकनीकी दोष के कारण कुछ पाठक ओपन कर [illegible]

वाट्स एप, यू-ट्यूब और ट्वीटर पर अपनी तरह से साहित्य का प्रचार-प्रसार हो रहा है। [illegible] में साहित्यसार एक-दूसरे की रचनाऐं पढ़ उनकी खूबियों- खामियों पर चर्चा कर स्वयं को [illegible] ओर ट्वीटर पर पाठकगण अपने प्रिय लेखकों के विचार पढ़ प्रत्युत्तर भी दे रहे हैं। यू-ट्यूब [illegible] और कविताओं के कई ऑडियो-वीडियो तैयार हो रहे हैं। जिन्हें देखने-सुनने वाले भी [illegible]

यह निःसंदेह कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया आज साहित्य प्रचार-प्रसार में [illegible] निभा रहा है जो निश्चित रूप से साहित्य और साहित्यकार दोनों के लिए समान रूप से [illegible]

हिंदी साहित्य केवल चेहरा नहीं है बल्कि देश, दुनिया, समाज, व्यवस्था व्यक्ति, [illegible] दिव्यांग सहित चर-चराचर के एक-एक चेहरे की झुर्रियों को पढ़ने, रचने, व्यक्ति करने, [illegible] है। साहित्य सदैव अपने मुखड़े से अंतरे और आखिर तक बाँधकर रखने का नाम है समाज की [illegible] बदली हैं ठीक वैसे-वैसी ही साहित्य ने अपने कहने के अंदाज को बदला है मगर चेहरे के [illegible] बरकरार रखा है जहाँ तक सोशल मीडिया का सवाल है यह नए दौर का एक माध्यम भर है [illegible] चीज तकनीक जैसी ही हो सकती है। एक क्षण को चमत्कृत करेगी। दूसरे ही पल [illegible] गायब होने बनने के मध्य में साहित्य ही स्थाई है। इस स्थिरता के लिए कागज-कलम का संकेत [illegible] सशोल होकर लिखने वाले भी छपने के लिए छटपटाते है। छपने के बाद ही उनकी साहित्यिक [illegible]

साहित्य में हलचल युगों से बनी रही है मेरे ख्याल से साहित्य का कोई भी ऐसा दौर [illegible] साहित्यिक सुगबुगाहट ने एक हलचल न पैदा की हो? कभी किसी तरह का विवाद [illegible] लिटरेचर का प्रवेश तो कभी देश से बाहर जाकर लिखने या लौटने के बाद लिखने की बात [illegible] निर्मल वर्मा से लेकर बहुतेरे नाम गिनाए जा सकते हैं। रस्किन बॉण्ड आज भी लिख रहे हैं। [illegible] भी रहस्य में रहकर लिख रही हैं। पढ़ी जा रही है। पाठक पंसद कर रहे हैं मुझे नहीं लगता कि [illegible] बनाने के लिए किसी खास मंच का हिस्सा हो जाना जरूरी हैं कलम में नएपन की खुशबू [illegible] है। शोर से साहित्य का रिश्ता है भी और नहीं भी है साहित्य ने सदैव समय के नब्ज को [illegible] अनुरूप अपने को रखा है। यह रखने वाले के ऊपर निर्भर करता है कि वह उसे किस तरह से [illegible]

किसी रचना के कालजयी बने रहने की एक ही वजह हो सकती है वह है रचना [illegible] किस्सागोई। बाकी फलक चाहे जितना भी फैला लिया जाए। उसकी परिधि उसके पाठक [illegible]

Scanned by CamScanner

...न का आविष्कार नहीं हुआ था तब भी साहित्य था। माध्यम मुखमुद्रा थी समय के साथ इसका स्थान ...खाचित्रों ने ली, उसके बाद कागज ने आज सोशल माध्यम ने लेने की कोशिश की है। लेकिन उस कोशिश को तब झटका लग जाता है जब रचना के छपने और पाठक के हाथ में पहुँचने की बात आती है। साहित्य मेरे जीवन का आधार है यह न होता तो मेरी अपनी कोई पहचान ही न होती। मेरी रचना ही मेरे लोगों के बीच की कड़ी है।(8)

सोशल मीडिया और साहित्य को लेकर जब हम उन लोगों से मिले, चर्चा छेड़ी तो बहुत कुछ निथरकर सामने आया। वरिष्ठ लेखकों को एक वह वर्ग है जो इन माध्यमों पर बहुत ज्यादा सक्रिय है। जैसे मैत्रेयी पुष्पा, उदय प्रकाश, चित्रा मुद्गल, गंगाप्रसाद विमल, अर्चना वर्मा, सुधा अरोड़ा, कात्यायनी, हरवंश मुखिया, निरंजन श्रोत्रिय, मृदुला गर्ग, मंगलेश डबराल, रमेश उपाध्याय जैसे तमाम लेखकगण मौजूद है। इसके पक्षधर है। बहुतेरे ऐसे भी है जो दोनों को बराबरी के पलड़े में तौलते हैं। अनामिका, नामवर सिंह, राजेन्द्र यादव, सुशील सिद्धार्थ, विवेक मिश्र, सुधाकर अदीब, अजीत कुमार जैसे तमाम कलाकार ऐसा कहते हैं। अनामिका कहती है कि उस माध्यम पर सक्रिय नही हूँ लेकिन उसके दूसरे वर्जन को निरन्तर पढ़ती रहती हूँ। इससे नए-नए लोगों के तौर तरीके से कुछ नया आइडिया मिल जाता है। एक ऐसा वर्ग है जो साहित्य के इस मकड़जाल को स्वीकारता तो है लेकिन उससे सृजन की गंभीरा को नकारता है। कम समय में अधिक प्रसिद्ध होने की भावना को सही नहीं ठहराते हैं। अपने-अपने समय और दौर के उदाहरण से उनके चेहरे के भाव में एक गर्व दिखाई देता है। जैसे कुंवर नारायण, काशीनाथ सिंह, केदारनाथ सिंह, कृष्णा सोबती, राजेश जोशी, शेखर जोशी, नासिरा शर्मा, मन्नू भंडारी, कृष्णा शर्मा, ममता कालिया, नित्यानन्द तिवारी विश्वनाथ त्रिपाठी, रामदरश मिश्र, विष्णु खरे सहित अनगिनत नाम हैं जो इस माध्यम की मजबूरी को साहित्य की परिधि से जोड़कर नहीं देखते है बल्कि कलम की ताकत को स्वीकारते हैं।

निष्कर्ष

परिचर्चा के केन्द्र में टिप्पणी है 'प्रश्न एक, जवाब अनेक' के अंतर्गत सोशल मीडिया का अंतर्जाल एक अंतर्विरोध का भी कारण है यह विरोध वैचारिकी से लगायत सृजन की गहनता तक है। अपने-अपने समय की स्मृति में छिपे श्रम की अनुगूंज भी है। जिस दौर में छपने-छापने और पाठक तक पैठ बनाने में सालों लग जाते थे, उसी के दूसरे दौर में सब कुछ पलक झपकते हासिल हो जाने की लत ने श्रमशील कलम को कुंद किया है उस कुंदता से लेखक का एक समूह संतोष प्रकट करता है लेकिन अपने समय के स्वर्णिम पलों से नैनों के कोरों को भी भीगो लेता है।

संदर्भ

1. दा गौडसन्स टाइम्स दिनांक 01-15 नवम्बर 2008
2. दा गौडसन्स टाइम्स दिनांक 01-15 नवम्बर 2008
3. दा गौडसन्स टाइम्स दिनांक 16-31 मार्च 2009
4. दा गौडसन्स टाइम्स दिनांक 16-31 मार्च 2009
5. दा गौडसन्स टाइम्स दिनांक 01-15 नवम्बर 2008
6. आजकल -जुलाई 2016 पृष्ठ सं. 38
7. आजकल -जुलाई 2016 पृष्ठ सं. 46
8. आजकल -जुलाई 2016 पृष्ठ सं. 27

Scanned by CamScanner